Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

SLA–301

B.A. Part–III (Supplementary) Examination, 2022

HINDI LITERATURE

Paper - I

(आधुनिक काव्य)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर सीमा **50** शब्द) :

   (i) लेखक के शम्बूक को भूमि-पुत्र की संज्ञा क्यों दी है ?

   (ii) 'शम्बूक' खण्डकाव्य के आधार पर लेखक की वैचारिक चेतना को स्पष्ट कीजिए।

   (iii) पंत की कविता 'मौन-निमंत्रण' का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

   (iv) जयशंकर प्रसाद के रचनाकर्म पर प्रकाश डालिए।

(v) 'सोन मछरी' कविता का संदेश व्यक्त कीजिए।

(vi) केशकम्बली असाध्य वीणा को साध पाने में क्यों सफल रहे ?

(vii) 'लोहे का स्वाद' कविता का मूल भाव क्या है ?

(viii) रघुवीर सहाय ने 'हमारी हिन्दी' कविता में हिन्दी की तुलना किससे की है और क्यों ?

(ix) दलित विमर्श का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(x) बिम्ब व प्रतीक को परिभाषित कीजिए।

खण्ड–ब

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द) :

2. जो व्यवस्था
व्यक्ति के सत्कर्म को भी
मान ले अपराध
जो व्यवस्था
फूल को खिलने न दे
निर्बाध
जो व्यवस्था
वर्ग-सीमित स्वार्थ से
हो ग्रस्त
वह विषम
घातक व्यवस्था
शीघ्र ही हो
अस्त

3. मेघा से मुझको
पराजित नहीं कर पाये
केवल व्यवस्था के तर्क की
पैनायी धार से
काटकर मेरा स्वत्व

वध कर क्रूर भाषा से
कर दिया मेरी शंकाओं का समाधान
लेकिन निरुत्तर मैं नहीं हुआ,
वही हुए।

4. ज्यों-ज्यों लगती है नाव पार
उर में आलोकित शत विचार!
इस धारा-सा ही जग का क्रम, शाश्वत इस जीवन का उद्‌गम
शाश्वत है गति, शाश्वत संगम!
शाश्वत नभ का नीला विकास, शाश्वत शशि का यह रजत ह्रास,
शाश्वत लघु लहरों का विलास
मैं भूल गया अस्तित्व-ज्ञान, जीवन का यह शाश्वत-प्रमाण
करता मुझको अमरत्व दान!

5. ले चल वहाँ भुलावा देकर,
मेरे नाविक! धीरे-धीरे।
जिस निर्जन में सागर लहरी
अम्बर के कानों में गहरी-
निश्छल प्रेम-कथा कहती हो
तज कोलाहल की अवनी रे।

6. वृक्ष हों भले खड़े,
हों घने हों बड़े,
एक पत्र छाँह भी,
माँग मत, माँग मत, माँग मत
अग्निपथ, अग्निपथ, अग्निपथ।
तू न थकेगा कभी,
तू न रुकेगा कभी,
तू न मुड़ेगा कभी,
कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ
अग्निपथ, अग्निपथ, अग्निपथ।

7. कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त
दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद

8. पढ़िए गीता
बनिए सीता
फिर इन सब में लगा पलीता
किसी मूर्ख की हो परिणीता
निज घर बार बसाइए।
होंय कँटीली
आँखें गीली
लकड़ी सीली, तबियत ढीली
घर की सबसे बड़ी पतीली
भरकर भात पसाइए।

खण्ड–स

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द) :

9. 'हिन्दी कविता और मार्क्सवाद' विषय पर लेख लिखिए।
10. "वेदना महादेवी के काव्य का स्थायी भाव है।" इस कथन की व्याख्या कीजिए।
11. 'असाध्य वीणा' कविता का विश्लेषण एवं मूल्यांकन कीजिए।
12. 'वो आदमी नहीं' तथा 'फिर धीरे-धीरे यहाँ का मौसम' गजलों के आधार पर दुष्यन्त की सामाजिक प्रतिबद्धता को समझाइए।